विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर में विद्यालयीय वातावरण के प्रभाव का एक अध्ययन

डॉ0 निर्भय सिंह,
एसोसिएट प्रोफेसर शिक्षाशास्त्र विभाग,
बी.वी.एम. (पी.जी) कॉलेज बाह,आगरा

प्रस्तावना

शैक्षिक संस्थायें ऐसे संगठन है जिनकी स्थापना कुछ विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए की जाती है। ये संगठन सामाजिक तन्त्र है। यदि कोई इनमें काय करने की इच्छा करता है और इनकी व्यवस्था करने की इच्छा करता है तो संस्थाओं की प्रकृति और कार्यशीलता का ज्ञान आवश्यक है। इन संगठनों की कार्यप्रणाली अत्यन्त जटिल होती है परन्तु फिर भी शिक्षा में कार्यरत व्यक्तियों के लिए उनको समझना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है क्योंकि उन्हें कुछ निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उनका प्रयोग करना पड़ता है।

उत्तर प्रदेश में माध्यमिक शिक्षा परिषद विश्व का सबसे बड़ा शिक्षा परिषद है। इनके द्वारा विश्व की सबसे बड़ी परिषदीय परीक्षा का संचालन होता है। इस परीक्षा में कक्षा 10 व 12 के परीक्षार्थी सम्मिलित होते है। ये परीक्षार्थी उत्तर प्रदेश शासन द्वारा मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालायों के शिक्षार्थी होते है उत्तर प्रदेश में शासन द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों की बहुत बड़ी संख्या है। उत्तर प्रदेश शासन द्वारा संचालित विद्यालयों को तीन भागों में विभाजित किया गया है। 1. राजकीय माध्यमिक विद्यालय 2.सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालय 3. स्ववित्त पोषित मान्यता प्राप्त प्राप्त विद्यालयविद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि क्यों प्रभावित होती है, इनकी शैक्षिक उपलबिध पर किन कारकों का प्रभाव पड़ता है कौन से ऐसे कारक है जिनको ठीक करके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है। वर्तमान संदर्भ में जानना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले विद्यालयी वातावरण के कारकों के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

शोध समस्या का कथन

विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर में विद्यालयीय वातावरण के प्रभाव का एक अध्ययन।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य है।

1. स्वायत्त एवं परिचित वातावरण वाले विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि की तुलना करना।
2. स्वायत्त एवं नियंत्रित वातावरण वाले विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि की तुलना करना।
3. परिचित एवं नियंत्रित वातावरण वाले विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि की तुलना करना।

शोध परिकल्पना

उपरोक्त उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति के लिए निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया–

1. स्वायत्त एवं परिचित वातावरण वाले विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।
2. स्वायत्त एवं नियंत्रित वातावरण वाले विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।
3. परिचित एवं नियंत्रित वातावरण वाले विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शेध अध्ययन में आगरा जनपद के समस्त माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कुल छात्रों में से 120 छात्रों का चयन सरल यादृच्छिक विधि के द्वारा किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध में आंकड़ों का वर्गीकरण करने के लिए डॉ0 मोती लाल शर्मा द्वारा निर्मित विद्यालयी वातावरण प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है तथा छात्रों की उपलब्धि जानने के लिए उनके हाईस्कूल परीक्षाफल के प्राप्तांकों का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ

प्रस्तु शोध अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन तथा टी0–मान का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं अर्थापन

सारिणी–1: स्वायत्त एवं परिचित वातावरण वाले विद्यालयों में छात्रों की उपलब्धि

वातावरण	छात्रों की संख्या	उपलब्धि का माध्य	उपलब्धि का मानक विचलन	टी–मान
स्वायत्त	24	355.33	64.20	1.69
परिचित	96	330.82	58.47	

स्वायत्त वातारण वाले छात्रों की परिचित वातावरण वाले छात्रों से तुलना की गयी । स्वायत्त वातावरण वाले छात्रों की संख्या 24 हैं स्वायत्त वातावरण का मध्यमान 355.33 है एवं मानक विचलन 64.20 है। परिचित वातावरण वाले विद्यालयों का मध्यमान 330.82 है जबकि मानक विचलन 58.478 है। टी का प्राप्त मान 1.69 है जो सारिणी के दोनों मानों से कम है। अतः यह कह सकते है कि स्वायत्त वातावरण एवं परिचित वातावरण वाले विद्यालयों के छात्रों के उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। दोनों प्रकार के वातारण वाले छात्रों की उपलब्धियाँ समान है।

सारिणी –2: स्वायत्त एंव नियंत्रित वातावरण वाले विद्यालयों में छात्रों की उपलब्धियाँ

वातावरण	छात्रों की संख्या	उपलब्धि का माध्य	उपलब्धि का मानक विचलन	टी–मान
स्वायत्त	24	355.33	64.20	2.83
परिचित	96	314.35	59.54	

स्वायत्त वातावरण वाले छात्रों की नियंत्रित वातावरण वाले छात्रों से तुलना की गयी। स्वायत्त वातावरण वाले छात्रों की संख्या 24 है। जबकि स्वायत्त वातावरण वाले छात्रों की संख्या 96 है। स्वायत्त वातावरण का मध्यमान 353.33 है। एवं मानक विचलन 64.20 है। नियंत्रित वातावरण वाले विद्यालयों का मध्यमान 314.35 है। और मानक विचलन 59.54 है टी का प्राप्त मान 2.83 है जो सारिणी के दोनों मानों से अधिक है। अतः यह कह सकते है कि स्वायत वातावरण तथा नियंत्रित वातावरण वाले विद्यार्थियों के छात्रों की उपलब्धि में सार्थक अन्तर है दोनों प्रकार के वातावरण वाले छात्रों की उपलब्धियाँ असमान है।

सारणी 3: परिचित एवं नियंत्रित वातावरण वाले विद्यालयों में छात्रों की उपलब्धि

वातावरण	छात्रों की संख्या	उपलब्धि का मध्य	उपलब्धि का मानक विचलन	टी–मान
परिचित	96	330.82	58.47	1.93
नियंत्रित	96	314.35	59.54	

परिचित वातावरण वाले छात्रों की नियंत्रित वातावरण वाले छात्रों से तुलना की गयी। परिचित वातावरण वाले छात्रों की संख्या 96 तथा नियंत्रित वातावरण वाले छात्रों की संख्या 96 है। परिचित वातावरण वाले विद्यालयों का मध्यमान 330.82 है एवं मानक विचलन 58.747 है और नियंत्रित वातावरण वाले विद्यालयों का मध्यमान 314.35 है व मानक विचलन 59.54 है। टी का प्राप्त मान 1.93 है जो सारिणी के दोनों मानों से कम है। अतः यह कह सकते है कि परिचित वातावरण वाले विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धी में सार्थक अन्तर नहीं है। दोनो प्रकार के वातावरण वालें छात्रों की उपलब्धियाँ समान है।

निष्कर्ष

विद्यालय वातावरण के आधार पर छात्रों की उपलब्धि का निष्कर्ष निम्न रूप में है–

1. स्वायत्त वातावरण वाले तथा परिचित वातावरण वाले छात्रों की उपलब्धियाँ की तुलना की गयी है। दोनों प्रकार के वातावरण वाले विद्यार्थियों में छात्रों की उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं आया है

इसलिये दोनो प्रकार के वातावरण वाले छात्रों की उपलब्धियाँ एक समान है।

2. स्वायत्त वातावरण वाले तथा नियंत्रित वातावरण वाले छात्रों की उपलब्धि की तुलना की गयी है। दोनों प्रकार के वातावरण वाले विद्यालयों में छात्रो की उपलब्धि में सार्थक अन्तर आया है इसलिये दोनों के प्रकार के वातावरण वाले छात्रों की उपलब्धियाँ समान नहीं है।

3. परिचित वातावरण वाले तथा नियंत्रित वातावरण छात्रों की उपलब्धि की तुलना की गयी है। दोनों प्रकार के वातावरण वाले विद्यालयों में छात्रों की उपलब्धि में सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ है इसलिये दोनों प्रकार के वातावरण वाले छात्रों की उपलब्धियाँ एक समान है।

सन्दर्भ सूची

- शर्मा आर०ए०, (1993) शोध प्रबन्ध लेखन इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ।
- लोकेश, (1984) शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा०लि, नई दिल्ली।
- विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर में विद्यालीय वातावरण के प्रभाव का एक अध्ययन
- शर्मा हर, स्वरूप (1983) सांख्यिकी विधियाँ राम प्रकाश सन्स अस्पताल रोड आगरा। रायजादा बी०एस० (1996) शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व राजस्थान हिन्दी अकादमी ,राजस्थान।
- व्याती जमनालाल (1970) ए कम्पेरेटिव स्टडी आफ दी आर्गेनाइजेशनल क्लाईमेट इन राजस्थान स्कूल इण्डियन एजुकेशनल रिव्यू ,पृष्ठ 107–117
- सुखिया एम०पी०व मेहरोत्रा, शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व विनोद पुस्तक मंदिर ,आगरा।
- डॉ0 निर्भय सिंह, शोध अनुसंधान, संस्थागत वातावरण के सम्बन्ध में राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि एवं व्यक्तित्व विमाओं का एक अध्ययन।